Vol. 9
Issue 2
15 July 2018
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
शोध संचयन

# भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का संरक्षित स्मारक : पुंडरिक जी की हवेली, जयपुर

**बीज शब्द :**

*विरासत, खगोल, कला प्रियता, फ्रैस्को, सवायतता।*

*राजस्थान राज्य की राजधानी जयपुर अपनी ऐतिहासिक विरासतों के लिये प्रसिद्ध है। जयपुर के सवाई राजवंश के राजा जय सिंह द्वारा संस्थापित जयपुर को 1727 ई0 में नये स्वरूप में बसाया गया था। वर्तमान में ये नगरी अपनी ईमारतों के रंग के कारण पिंक सिटी के नाम से भी जानी जाती है। यहां पर ऐतिहासिक महत्व की बहुत सी धरोहरें हैं। यह धरोहरें राजस्थान के प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास का वैभव ही नहीं वहाँ की उच्चतम कला विधाओं का ज्ञान रखने वाले कलाकारों की ज्ञान पराकाष्ठा का भी नमूना पेश करते हैं। जयपुर, अजमेर, उदयपुर और जोधपुर जैसे शहरों में ऐसे ही ऐतिहासिक धरोहरों के अवशेष बिखरे पड़े हैं जो अपने वास्तु और कला विधा के कारण देश-विदेश में अपनी आभा को बनाये हैं।*

*ऐसी ही धरोहरों में एक है जयपुर स्थित पुंडरिक जी की हवेली। अपनी जयपुर यात्रा के दौरान मुझे इस हवेली में घूमने और इसके द्वारा जयपुर के सवाई राजवंश की राज परंपराओं को जानने का अवसर मिला जिसके लिये मैं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के राजस्थान मंडल की आभारी हूँ।*

*****

**डॉ० सीमा परिहार,**
सहायक प्रोफेसर- इतिहास,
मानविकी विभाग, आर0आई0एम0टी0 यूनिवर्सिटी,
मंडी गोबिन्दगढ़, पंजाब
E-mail: simiparihar@yahoo.co.in

# भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का संरक्षित स्मारक : पुंडरिक जी की हवेली, जयपुर

राजस्थान प्राचीन समय से ही राजपूतों की शान का प्रतीक रहा है। राजपूत शासक जहाँ एक ओर अपनी युद्ध प्रियता के लिये जाने जाते थे वहीं दूसरी ओर अपने कला प्रेमी होने के कारण भी राजपूत शासकों की विशेष पहचान है। इसका नमूना इनके संरक्षण में बने किले, महल, प्राचीरें और उन पर की गई नक्काशी और चित्रकला के रूप में देखा जा सकता है। आज भी इन्हें राजथान की प्राचीन धरोहरों के रूप में देखा जा सकता है। यह धरोहरे राजस्थान के प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास का वैभव ही नहीं वहां की उच्चतम कला विधाओं का ज्ञान रखने वाले कलाकारों की ज्ञान पराकाष्ठा का भी नमूना पेश करते हैं।[1] जयपुर, अजमेर, उदयपुर जिसे अब खंडहरों और जर्जरता के कारण जिसे अब "old city"[2] भी कहा जाता है, और जोध पुर जैसे शहरों में ऐसे ही ऐतिहासिक धरोहरों के अवशेष बिखरे पडे हैं राजस्थान में जयपुर स्थित पुंडरिक जी की हवेली अपनी Fresco-Secco तकनीक के लिये प्रसिद्ध है। भारत में फ्रैको चित्रकला में निपुणता के उदाहरण अजन्ता की गुफओं में देखने को मिलते हैं, जो कि पहली से 7वी0 आठवी0 शताब्दी में चित्रित हैं[3], भी मिलते हैं। यह हवेली सवाई राजा जयसिंह (1700-1743 ई0) ने अपने राज पुरोहित रत्नाकर भटट के लिये बनवाई थी। रत्नाकर भटट तंत्र विद्या और खगोल विद्यान के महान ज्ञाता थे। उनसे ही सवाई राजा जयसिंह ने तंत्र विद्या और खगोल शास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया था। रत्नाकर भटट ने पुंडरिक यज्ञ किया था, जिसके कारण राजा जयसिंह ने उन्हें पुंडरिक की उपाधि प्रदान की, और जयपुर के मध्य में उनके रहने के लिये एक हवेली बनवाई। हिन्दू परंपरा के अनुसार पुंडरिक का एक अर्थ सफेद कमल है। पुंडरिक विष्णु भगवान का नाम भी है और संस्कृत में चावल के दाने को भी पुंडरिक कहा जाता है। महाभारत में भी पुंडरिक स्थान का उल्लेख मिलता है। महाभारत के अनुसार यह एक यज्ञ है। पुंडरिक का अर्थ कमल से भी लिया जाता है। जो भी हो यह एक यज्ञ तो है ही जो राजसूर्य और अश्वमेध यज्ञ की भांति प्राचीन राजवंशों के राजा अपनी विजयों को दर्शाने या विजय पाने के लिये किया करते थे। पुंडरिक जी की हवेली जयपुर के ब्रह्मपुरी क्षेत्र में स्थित है। पुंडरिक जी के नाम पर इस हवेली के आसपास का क्षेत्र ही पौंडरिक कहलाता है। इस हवेली के एक कमरे में फ्रैस्को तकनीक के प्रयोग से चित्रकारी सवाई राजा जगत सिंह (1803-1819) के समय में करवाई गई थी। इस तकनीक में चित्रकारी के लिये चूने, मार्बल का चूरा, नारियल और रेत से तैयार की गई पृष्ठ भूमि पर, रंगों से चित्रकारी की जाती है। इस विधि में मुख्यत: अर्थ कलर्ज जैसे सफेद, पीला, हल्का भूरा, हरा और गेरुये रंगों का प्रयोग होता है। रंगों का प्रयोग इतनी सफाई और तकनीक के साथ किया गया है, इतना समय बीत जाने के बाद भी दीवारों पर बनी चित्रावली ज्यों की त्यों नजर आती है।

हवेली की दीवारों पर बनी चित्रकारी में मुख्यत राज दरबार, सवाई राजवंश के राजाओं को अपने मंत्रीमंडल और व्यकिगत जीवन में दर्शाया गया है। कहीं पर महलों और महल के बाहर के प्राकृतिक दृश्यों के चित्र मिलते हैं तो कहीं गन्गौर, होली और तीज आदि उत्सवों को मनाते हुये लोगों के उल्लास को देखा जा सकता है। इसके साथ ही पेड पौधों, फूल पत्तियों और राजमहल की विशालता को बहुत सुंदरतम ढंग से बारीकी

के साथ चित्रित किया गया है, जिससे देखने वाले को उस समय की सांस्कृतिक और सामाजिक विशेषताओं के साथ साथ आर्थिक संपनता और कला प्रियता का भी पता चलता है।

इन चित्रों में सवाई राजाओं के अन्य मुगल शासकों के साथ बैठकों के दृश्य भी बहुत सुदरतम ढंग से चित्रित हैं। इन दृश्यों में शासक अपने हमेशा की भांति भूमि आसन मुद्रा में नहीं बल्कि एक छोटे चौडे तख्त पोश पर अपने घुटनों को पीछे की ओर घुमाये हुये अपने शरीर भार को अपनी टांगों पर रखे हुये दिखाया गया है। राजा के साथ उनके दरबारियो और पीछे खडे संतरियों को भी चित्रित किया गया है।

राजस्थानी चित्रकला की विशेषताओं को दर्शाते हुये इन चित्रों में लोगों के जीवन का बहुत ही सुदर और सजीव चित्रण देखने को मिलता है। एक ओर जहां लोग उत्सवों को मनाते हुये नाच-गानों में व्यस्त हैं, तो उसी आनन्द में मग्न राज परिवार के लोग अपने महलों के झरोखों से इन नजारों का आनन्द लेते दिखायी दे रहे हैं। कहीं पर महल की छत पर शासक और राज परिवार के अन्य पुरूष-स्त्रियां अपने दास-दासियों के साथ नाच-गानों में व्यस्त है। एक अन्य दृश्य में राजकुमार और उसकी पत्नी घने वुक्षो के बीच में बैठे हैं। समीप ही राज परिवार के बहुत से दास दासियां भी खडे हुये चित्रित हैं। राजा इन आयोजनों में राज परिवार और दरबारी हाथियों की पीठ पर लोगों के बीच जाकर भी उत्सवों का आनन्द लेते चित्रित हैं। जिसका अभिप्राय यह कि सवाई शासकों और जनता के बीच आपस का एक गहन और मधुर संबन्ध स्थापित था।

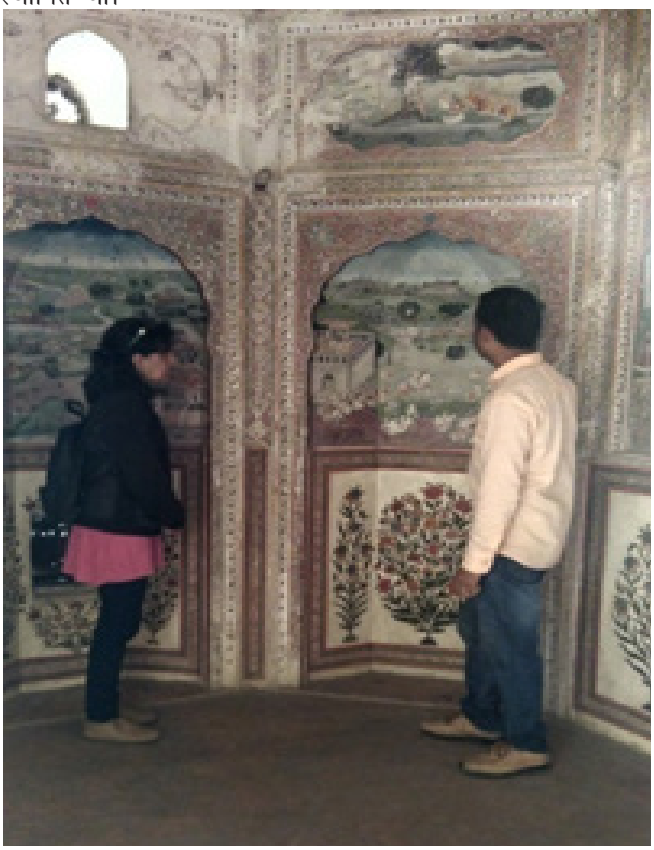

पुंडरिक जी की हवेली में यद्यपि एक कमरे में ये सारे चित्र चित्रित हैं। लेकिन भीतर प्रवेश करने पर आपको न केवल 17 वी0 18 वी0 शताब्दी में प्रचलित लोक संस्कृति और राजनीतिक हालातों की तस्वीर दिखाई देती है बल्कि प्राकृतिक नजारों के साथ-साथ सवाई राजवंश की शासन परंपरा, जन सवायतता, प्रजा प्रियता और लोक परायणता के भी दर्शन होते हैं। इन चित्रों को देखकर कभी कभी तो यह भी प्रतीत होता है कि हम स्वयं उस दौर में प्रवेश कर रहे हैं और ये सारे दृश्य कोई बीती बाते नहीं बल्कि हमारे सामने घटित हो रहे हैं। प्राचीनकाल में अजंता स्कूल को चित्रकला की दृष्टि से रंगों के प्रयोग और दृश्यों को जीवंत रूप देने के लिये अत्यधिक दक्ष माना जाता रहा है।[4] हालांकि जयपुर और इसके आसपास विशाल किलों और मंदिरों की विरासत को देखकर राज्यस्थान के इतिहास के अनायास

ही हो जाते हैं, लेकिन इतिहास में रूचि रखने वाले अन्वेषकों और कला प्रेमियों के लिये पुंडरिक जी की हवेली में ज्ञान और कला का स्वर्णिम भंडार है जिसे देखे बिना जयपुर से वापिस लौट जाना सवाई राजवंश और जयपुर की विरासत के दर्शनों को अधूरा छोडकर जाना है।

**शेष पृष्ठ 66 पर**

जैसी बिमारियाँ ईश्वरीय कोप नहीं बल्कि संक्रमित बिमारियाँ है। जिनका ईलाज किया जा सकता है। वह कहता है-''रोगी को अलग रखो, नमक सिझा कर पानी पिलाओं, उसके कपडे कुएं के किनारे झरने में मत धोओ। भात- पान्ता, घाटो, अमानी, धान जो भी खाओ ढककर रखो। बासी सडा मत खाओ।''[19] इस प्रकार बिरसा ने आदिवासियों को अज्ञान के अंधेरे से बाहर निकालने का कार्य किया। बिरसा के कार्यो ने बिरसा को मुंडाओं का ईश्वर बना दिया। आदिवासी कौम बिरसा के बलिदान को कभी व्यर्थ न जाने देगी। रणेंद्र सुधीर पाल के अनुसार ''बिरसा राष्ट्रीय नेताओं की श्रेणी में आनेवाले पहले आदिवासी नेता बन गये इस सकारात्मक प्रभाव ने अन्य इतिहासकारों को भी प्रेरित किया है।''[20] भारत के सभी आदिवासी समुदाय ने आदर्श और प्रेरणा के रूप में स्वीकारा है। भगवान बिरसा मुंडा ने आदिवासी समुदाय में चेतना फूंकने का सबसे सशक्त कार्य मुक्ति दिलाने एवं उनकी अस्मिता जगाने का कार्य बिरसा मुंडा ने किया। इस जननायक का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं आदिवासियों के विकास में उल्लेखनीय योगदान रहा है। इसीलिए बिरसा मुंडा को आदिवासी समाज का दीपस्तंभ माना जाता है। बिरसा नई पीढी के लिए युगप्रर्वतक है। इस महान योद्धा का नाम युगो-युगो तक लिया जाएगा। इसमे कोई संदेह नही।

**निष्कर्ष** - युग प्रवर्तक और आदिवासी समुदाय के मार्गदर्शक बिरसा मुंडा के रूप में उनका संघर्ष आज भी हमारे जीवन को प्रेरित करता है। बिरसा मुंडा का नायकत्व मनुष्य के मुक्ति संघर्ष का धवल प्रतिक है। बिरसा मुंडा का जनआंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल माना जाता है। इसीलिए नई पीढी के लिए उनकी संघर्ष गाथा प्रेरणादायी है। बिरसा मुंडा का मौजुदा साहित्य हमारे सामने कई प्रश्न एवं सवाल खडे करता है। जहाँ एक तरफ भारत सरकार बिरसा को एक स्वतंत्रता सेनानी और देशभक्त के रूप में मानती है वहीं दूसरी तरफ बिरसा के मूल सिद्धांतों का खुला उल्लंघन करती है। जहाँ सीएनटी ॲक्ट बिरसा और अन्य शहिद आदिवासियों के बलिदान एवं योगदान का फल माना जाता है। बिरसा के संघटनात्मक कौशल ने लोगों को प्रेरित किया और जमीदारों, ठेकेदारों के चंगुल से बचाया और आदिवासी समुदाय का जमीन पर पूर्ण स्वामीत्व हो इसकी पूरजोर कोशिश की है। इस प्रकार बिरसा मुंडा जैसे वीर स्वतंत्रता सेनानी के इतिहास से हमे आज के इंटरनेट युग में अनेक सीख मिलती है। बिरसा मुंडा का इतिहास और सिद्धांत आदिवासी आंदोलन के लिए ऐतिहासिक पर्व है। वहीं साहित्यकारों ने लोकनायक बिरसा मुंडा के संघर्ष और उनके शौर्य पर आधारित विभिन्न भाषाओं में जो साहित्य लिखा वह आदिवासी समुदाय और बिरसा की विचारधारा पर चलने वाले लोगों के लिए निश्चित रूप से प्रेरणादायी रहेगा इसमें कोई संदेह नहीं।

19. डॉ संजय कुमार शर्मा - आदिवासी जननायक: बीरसा मुंडा : महाराष्ट्र हिंदी परिषद: 15वां अधिवेशन 28-29 दिसंबर 'उपलब्धि' 2007 पृ0 253

20. संपादक : रणेंद्र सुधीरपाल - झारखंड एन्साइक्लोपीडिया, उलगुलानों की प्रतिध्वनियाँ, खंड-1 वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2008, पृ0 13

◆◆◆

**पृष्ठ 44 का शेष** **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण.....**

यह कहने में भी कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि सहित्य और कला में उपलब्धियां समय की वह देन हैं जिन पर हम गर्व कर सकते हैं, क्योकि हमारे पूर्वजों ने भविष्य के प्रति एक उदार नजरिया रखते हुये ही इसकी रचना की है,[5] इसी लिये यह धरोहरें ज्यों की त्यों हमारे सामने विद्यमान हैं। वर्तमान में ये भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीन केंद्रीय संरक्षित स्मारक है, जिसके संरक्षण की जिम्मेदारी विभाग के जयपुर मंडल के पास है। हमारा दायित्व न केवल वर्तमान में इनका संरक्षण और संवन करना है बल्कि आने वाली पीढियों के लिये इन्हें सजो कर रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

**संदर्भः**

1. दीपक शर्मा, हिस्टी एंड कल्चर ऑफ राजस्थान, राजस्थान इंडिपैंडेट पब्लिकेशन, 2018, पृ0 2
2. रमा मेहता, इनसाइड द हवेली, पेंगुइन बुक्स पुतनाम, 1996, पृ0 1
3. रमा शंकर त्रिपाठी, हिस्ट्री ऑफ एन्सिएंट इंडिया, मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली, 1981, पृ0 276
4. वही, पृ0 276
5. एस0 कृष्णस्वामी अयंगार, सीमा पब्लिकेशन, दिल्ली, 1980, पृ0 28

◆◆◆